पत्रकारिता के अंतर्विरोध

पत्रकारिता के संदर्भ में एक तरह से तीन लक्ष्य या निष्कर्ष मान लिये गये है। वे है- पत्रकारिता एक अच्छा कैरियर है। यानि आजीविका का अच्छा साधन है। दूसरा, वह समाज में बदलाव लाने का एक बेहतर और आजमाया उपाय है। साथ ही पत्रकारिता एक अच्छा व्यवसाय या उद्यम अथवा उद्योग भी है। पूरे देश में पत्रकारिता के शिक्षण संस्थानों की मौजूदगी से संभवत: इस बात की पुष्टि होती है। अधिक फीस देकर नये पढ़ने वालों की बढ़ती संख्या यही तो बताती है। एक विश्वविद्यालय में पत्रकारिता पढ़ रहे विद्यार्थियों से पूछा तो उन्होंने यही बताया कि वे इसे चिकित्सा या प्रोद्यौगिकी की तरह कैरियर का विकल्प तो नहीं मानते हैं पर अन्य सामान्य आजीविका के मार्गों से वह बहुत बेहतर है। इसीलिये उन्होंने इसे चुना है। साथ ही वे यह मानते हैं कि इससे वे समाज में बदलाव लाने में सहयोगी होंगे। उनसे यह भी पूछा गया की वे पढ़ाई पूरी करने के बाद कितने वेतन की अपेक्षा रखते हैं तो उन्होंने पहले तो कहा कि वे अच्छा वेतन और सुविधाओं की उम्मीद कर रहे हैं और उन्हें बताया भी यही गया है। जब इस अच्छे वेतन को स्पष्ट करके जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि पचास हजार से एक लाख के बीच तो चाहिये ही। उन्हें उम्मीद भी है कि इतना नहीं तो इससे कुछ कम तो जरूर ही मिल जायेगा और मिलना भी चाहिये।

पत्रकारों के एक ऐसे समूह, जिसमें एक साल से दस साल से पत्रकारिता कर रहे लोगों से, जब यह जानना चाहा कि वे इस प्रोफेशन में किस कारण से आये हैं तो उनका पहला उत्तर था कि पत्रकारिता समाज को बदलने का माध्यम है। एक ऐसी समाज सेवा है जिससे लोगों की तकलीफों को दूर किया जा सकता है। इस बारे में उनके पास कुछ स्थानीय से लेकर विश्व स्तर के कुछ उदाहरण भी हैं। ऐसी ही बात पत्रकारिता पढ़ रहे छात्रों ने इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए बतलाई थी। उनके पास भी कुछ पढ़ी, सुनी हुई जानकारियां इस बारे में थी। दूसरे कारण में उन्होंने इस माध्यम को अपनी पहुंच बढ़ाने और अपने को स्क्रीन पर देखें जाने का लाभ भी बताया।

व्यवसाय या उद्यम के संबंध में सीधे-सीधे कोई स्वीकार नहीं करता है। वे लोग भी, जो इस व्यवसाय को लाभ के लिए प्रारंभ कर चुके हैं, प्राय: अपनी कठिनाइयों का उल्लेख करते है। पर मीडिया के अध्येता और विश्लेषक बताते हैं कि 1960 के बाद लगातार मीडिया का व्यवसाय या उद्योग से सीधा या परोक्ष संबंध रहा है। वे यह भी कहते है कि 1980 के बाद तो ऐसे लोगों संख्या लगातार बढ़ी है। इनमें वे लोग भी है जिन्होंने धन तो अपना लगाया है, पर अपने को छिपा कर रखा है। ऐसे लोग अंतिम नियंत्रण तो अपने पास ही रखते हैं। न्यूज चैनल से जुड़े एक अनुभवी पत्रकार ने यह भी बताया कि 2000 के बाद तो इस व्यवसाय में आने का कारण पत्रकारिता या मीडिया का अपने अन्य उद्यमों के लिए कवच के रूप में उपयोग करना है। ऐसे व्यवसायियों की संख्या अच्छी खासी भी है। वे नुकसान में होते हुए, मुनाफे में होने का हुनर

जानकर ही इसमें मौजूद हैं। यह सभी स्वीकार करते हैं कि इससे धन लगाने वाले, इससे मुनाफा मिलेगा, इस आशा-आकांक्षा से ही होते हैं। वे नुकसान की स्थिति में उसमें बने नहीं रहते।

यह सब लोग मानते हैं कि पत्रकारिता लोगों को सरोकारी जानकारी देने के लिए है। यह भी मानते हैं कि उसे लोक सेवकों, सरकार आदि के कार्यों की, लोगों को विकास के संदर्भ में समीक्षा करनी चाहिये। वह उनके कार्य और व्यवहार पर निगरानी रखे और लोगों को अपने विचार से अवगत कराते हुए उन्हें जागरूक करे। एक तरह से वह प्रधानत: सेवा ही है, व्यवसाय नहीं है। वह सत्ता, प्रशासन, सरकार या बाजार के न्यस्त स्वार्थों और लोक अहितकारी इरादों या कार्यों की ना तो पैरोकार है और न ही उसकी छवि गढ़ने का काम करती है। पत्रकारिता पढ़ रहे युवाओं से जब यह पूछा गया कि समाज में बदलाव लाने के उनके उपाय से प्रबंधन के सहमत न होने की स्थिति में वे क्या करेंगे या यदि वेतन कम मिला या वेतन और सुविधाओं में कटीती की गई तो उनका कदम क्या होगा। इस तरह से पूछे जाने पर वे यकायक चुप हो गये। यही बात फेसबुक पर भी, विचार के लिए आने पर नये-पुराने पत्रकारों की प्रतिक्रिया बहु आयामी रही। प्रबंधन की बाधा आने पर क्या किया जायेगा, इसके बजाय यह विमर्श, प्रबंधन ही बाधा पैदा करता है, ऐसा विचार व्यक्त करने के आसपास ही घूमता रहा। कुछ लोग तो परिधि के बाहर जाकर यह भी कहते रहे कि युवाओं में संभावनायें है वे उन चुनौतियों का सामना कर लेंगे। कुछ ने कहा कि हमें युवाओं को हतोत्साहित करने के बजाय प्रोत्साहित करना चाहिये। इस तरह की प्रतिक्रियाओं से तो लगता है कि हम सबने या तो मीडिया को व्यवसाय और व्यवसायिक प्रबंधन का हिस्सा मान लिया है और उसे चुनौती के परे भी मान लिया है। तभी तो कुछ ने कहा कि हमें प्रबंधन की बाधाओं के बीच से ही रास्ता निकालकर अपना काम करना होगा। एक तरह से यह ठीक भी है कि इस समय मीडिया स्वामी प्रबंधक केन्द्रित है, सम्पादक केन्द्रित नहीं है।

यहीं यह सोचना होगा कि क्या यह स्थिति बनी रहे या पत्रकारिता लोक- सेवा केन्द्रित हो जाये। वह अपने ही उन मूल्यों के साथ जुड़े जो लोगों के हितो के लिए हैं। अभी हाल ही अर्णब गोस्वामी ने तटस्थता की स्थिति को खारिज करते हुए कहा है कि यह एकदम झूठ है। पत्रकारिता तटस्थ नहीं रह सकती । पर यह बात दो आयामी है। इसमें भी यह साफ होना चाएिये कि वह लोगों के हितों के साथ ही होगी और ऐसा करते हुए वह तथ्य और सत्य को भी नहीं बिसारेगी।

ooo